हिन्दू जनजागृति समितिद्वारा समर्थित ग्रन्थ !

कुम्भपर्व एवं वर्तमान स्थिति : खण्ड ३

कुम्भमेलोंकी वर्तमान दु:स्थिति

नेताओंका हिन्दू-द्वेष एवं हिन्दुत्वनिष्ठोंकी भी उदासीनता !

भूमिका

कुम्भमेला अर्थात हिन्दू धर्मका एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक पर्व ! सहस्रों साधु-सन्त एवं करोडों श्रद्धालुओंकी उपस्थितिमें होनेवाले कुम्भक्षेत्रोंके मेले हिन्दुओंके लिए विश्वकी सबसे बडी धार्मिक यात्रा ही है ! वहांका वातावरण अत्यन्त चैतन्यमय एवं सात्त्विक होता है ।

हिन्दुओंके लिए परम वन्दनीय इन कुम्भमेलोंके नियोजनकी ओर राज्यकर्ता तथा प्रशासन गम्भीरतासे देखते नहीं पाए जाते । कुम्भमेलेके लिए आरक्षित भूभागपर अतिक्रमण, नियोजनमें स्थानीय प्रशासनकी अत्यधिक अनदेखी, प्रशासनका हिन्दुओं और उनके परम वन्दनीय साधु-सन्तों की ओर ध्यान भी न देना, ये प्रकरण कुछ कुम्भमेलोंमें अत्यन्त प्रकर्षतासे दिखाई दिए । परधर्मियोंका तुष्टिकरण करनेवाले तत्कालीन राज्यकर्ताओंका हिन्दू-द्वेष भी प्रत्येक स्थानपर दिखाई दिया । इस ग्रन्थमें उदाहरणसहित इसका वर्णन किया है । राज्यकर्ताओंके हाथोंकी कठपुतली बनी पुलिसका अशोभनीय आचरण तथा नासिक-त्र्यंबकेश्वर में प्रति १२ वर्षोंमें होनेवाले कुम्भमेलेकी पूर्वतैयारीमें नियोजनके अभाववश हो रही धांधली, अनेक उदाहरणोंके माध्यमसे इस ग्रन्थमें दी है ।

कुम्भमेलेकी पवित्रताहननका कार्य करनेमें राज्यकर्ता, प्रशासन और पुलिस के साथ ही धर्माभिमानशून्य हिन्दुओंका भी हाथ है । धर्मसम्बन्धी अज्ञान और अनास्था के कारण हिन्दुओंको स्वधर्मका अभिमान नहीं है । इसी कारण कुम्भमेलोंमें हिन्दुओंका आचरण किसी पर्यटककी भांति दिखाई देता है । इन पवित्र पर्वोंका अपनी साधना हेतु लाभ उठानेकी अपेक्षा अन्यों को अधिकाधिक लूटनेका कुकर्म भी कुछ हिन्दू और वहांके व्यवसायियोंद्वारा

किया जाता है । इसके साथ ही कुछ हिन्दुत्ववादी संगठनोंकी कर्तव्य-विमुखताका विदारक दर्शन भी इस ग्रन्थमें कराया गया है ।

कुम्भमेलेकी पवित्रता बनाए रखनेके लिए केवल राज्यकर्ता एवं प्रशासन को परिवर्तित करना ही महत्त्वपूर्ण नहीं है, अपितु आज हिन्दू धर्मके चिरन्तन ज्ञानका महत्त्व जाननेवाले तथा साथ ही साधनारत राज्यकर्ताओंकी आवश्यकता है । हिन्दू राष्ट्रके बिना यह नहीं हो सकता । प्राचीन कालके हिन्दू राजा धर्मपालक और कर्तव्यपरायण थे, इसलिए जनता भी सुखसमृद्धियुक्त तथा संकटमुक्त थी ।

वास्तविक अर्थोंमें व्यक्ति और राष्ट्र का विकास होने हेतु राज्यकर्ताओंके साथ ही जनताको भी आज साधना करनेकी आवश्यकता है । हिन्दुओंको धर्मशिक्षा लेकर उसके अनुसार कृत्य करनेकी आज नितान्त आवश्यकता है । इससे उनका रज-तम नष्ट होकर उनकी सात्त्विकता बढेगी । सर्वत्रकी सात्त्विकता बढनेसे कोई समस्या नहीं रहेगी । इसके लिए आवश्यक धर्मशिक्षा और धर्मप्रेमी हिन्दुओंका विशाल संगठन कुम्भमेलेके माध्यमसे सहजसाध्य हो सकता है ।

धर्मशिक्षा लेनेपर ही हिन्दुओंमें धर्मजागृति होकर धर्माभिमान निर्माण हो सकता है । हिन्दू यदि आध्यात्मिक दृष्टिसे कुम्भमेलेका महत्त्व समझ लें और इसके विषयमें जागृति करें, तो निश्चित ही प्रत्येक हिन्दूको इस श्रेष्ठ पर्वका लाभ होगा । धर्माभिमान निर्माण होनेसे हिन्दुओंमें संगठित भावनाका निर्माण होगा और केवल कुम्भमेलेमें नहीं, अपितु धर्ममें घुसपैठ कर चुके अन्य अनाचार दूर करने हेतु भी वे प्रयत्न कर पाएंगे । उनकी ओर कोई भी आंख उठाकर नहीं देख पाएगा ।

यह ग्रन्थ पढकर प्रकर्षतासे कुम्भमेलेकी दुर्दशाका बोध हो और उसे दूर करने हेतु हिन्दुओंसे प्रयत्न हों । केवल कुम्भमेलेको नहीं, अपितु सामान्य हिन्दुओंको भी उनका गतवैभव पुनर्प्राप्त कराने हेतु समस्त हिन्दू क्रियाशील हों, यह ईश्वरचरणोंमें प्रार्थना है ! - **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।]

卐 **भूमिका** १४

१. हिन्दू-द्वेषी प्रशासन, नहीं दु:शासन ! १६

* प्रयागराज कुम्भमेला २०१३ के नियोजनमें प्रशासनके कुप्रबन्ध के सम्बन्धमें सनातन संस्थाके साधकको हुए अनुभव ! १७

२. कर्तव्य-विमुख पुलिस २४

३. हिन्दू-द्वेषी राजनीतिक दल ! २६

३ अ. समाजवादी पार्टी २६

* कुम्भमेलेकी पूर्वतैयारीमें उत्तरप्रदेशकी मुसलमानप्रेमी समाजवादी पार्टीकी काली करतूतें ! २६

* कुम्भमेलेमें सन्तोंका अनशन करने हेतु बाध्य होना व सन्तोंका अपहरण होना, उ.प्र. के समाजवादी शासनका हिन्दूद्वेष ! २९

* भगदडके उपरांत उपचारके अभावमें घायलोंको मरने देनेवाले उ.प्र. प्रशासनपर सदोष मनुष्यवधका अपराध प्रविष्ट करें ! ३०

३ आ. कांग्रेस-राष्ट्रवादी कांग्रेस ३१

३ इ. भाजपा - भाजपा शासनसे यह अपेक्षित नहीं ! ३२

४. हिन्दुओंकी दु:खद स्थिति ३४

* कुम्भमेलेकी पवित्रता बनाए रखनेके प्रति उदासीन हिन्दू ! ३४

* 'साधु मन्दिरमें चिलम पीते हैं; इसलिए हम परिसरमें बीडी पीते हैं', ऐसा कहनेवाले हिन्दू ! ३५

५. हिन्दुत्वनिष्ठ संगठन और उनके कार्यकर्ताओं की दु:स्थिति ४३

६. पाखण्डी और हिन्दू-द्रोही संगठन ४७

७. जुलाई २०१५ से नासिकमें प्रारम्भ होनेवाले कुम्भमेलेका कुप्रबन्ध ४८

७ अ. कुम्भमेलोंके कार्योंके प्रति प्रशासनकी उदासीनता ४८

७ आ. हिन्दू-द्वेषी प्रशासन ४८

७ इ. कांग्रेस-राष्ट्रवादी कांग्रेसका हिन्दू-द्रोही शासन ५२

* सिंहस्थ कुम्भमेलेके नियोजनकी अक्षम्य अनदेखी करना ५२

* कुम्भमेलेकी प्राथमिक बातोंकी भी पूर्ति न कर पानेवाला निष्क्रिय शासन आतंकियोंसे हिन्दुओंकी रक्षा कर पाएगा ? ५७

७ ई. भाजपा ५८

७ उ. भाजपा-शिवसेना शासनसे अपेक्षित कार्य ५९

७ ऊ. केन्द्रशासनकी निष्क्रियता ६०

८. हिन्दुओ, कुम्भमेलेकी दुर्दशा दूर करनेके लिए सक्रिय हों ! ६३

९. हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनो, कुम्भमेलेमें आदि शंकराचार्यजीको अपेक्षित हिन्दू-संगठनका कार्य करें ! ७४

१०. हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान ! ७५

卐 सनातन संस्था एवं हिन्दू जनजागृति समिति द्वारा कुम्भमेलोंमें किया कार्य ७७

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दीके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन !

हिन्दीमें उर्दूकी भांति कुछ शब्दोंके नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. हज़ार, जोड़, गाढ़ । संस्कृत देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थोंमें शब्दोंके नीचे बिन्दु नहीं लगाती तथा कारकचिन्हको धातुसे जोडती है । संस्कृत समान हिन्दीका प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्यकी ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्ति इसका आचरण कर 'स्वभाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षाके कार्यमें सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाए ! – **(परात्पर गुरु) डॉ. आठवले**